E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सिंधिया राजवंश में महिलाओं की विरासत और शासन पर उनके प्रभाव का मूल्यांकन

नूरजहाँ बानो

पीएच. डी. शोधार्थी (इतिहास)

जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म. प्र.)

Paper Rcevied date

05/02/2025

Paper date Publishing Date

14/02/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.17164258

IMPACT FACTOR 5.924

शोध- सार

यह शोध पत्र ग्वालियर राज्य की शक्ति-संरचना में महिलाओं की वहुआयामी भूमिका का विश्लेषण करता है। सिंधिया राजवंश की महिलाएँ केवल पारिवारिक और धार्मिक जीवन तक सीमित न रहकर राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी सक्रिय रहीं। उन्होंने उत्तराधिकार विवादों के समाधान में निर्णायक हस्तक्षेप किया तथा ब्रिटिश साम्राज्य के साथ शूटनीतिक संबंधों को दिशा देने में भी अपनी भूमिका निभाई। दरवारी महिलाएं राजनैतिक निर्णयों की आंतरिक प्रक्रियाओं का हिस्सा वनीं और कई अवसरों पर उन्होंने संकट की स्थितियों में नेतृत्यकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

विरासत के संरक्षण और विस्तार में भी उनका योगदान महत्त्वपूर्ण रहा। उन्होंने मंदिरों, धर्मशालाओं और शैक्षणिक संस्थानों के निर्माण द्वारा सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित किया। महिला शिक्षा और सामाजिक सुधारों के प्रति उनकी जागरूकता ने ग्वालियर राज्य को एक प्रगतिशील दिशा प्रदान की। सती प्रथा, पर्दा प्रथा तथा बाल विवाह जैसी कुरीतियों पर प्रश्नचित उठाकर उन्होंने सामाजिक चेतना को जागृत किया।

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि सिंधिया राजवंश की महिलाएं केवल परिवार की संरक्षक भर नहीं थीं, बल्कि ये शासन व्यवस्था और समाज की संरचना को प्रभावित करने वाली सात इकाई के रूप में भी उभरी। अतः उनका योगदान भारतीय इतिहास में महिला सशक्तिकरण की एक प्रेरक मिसाल है।

शब्द-बीज - ग्वालियर राज्य सिंधिया राजवंश महिलाएँ, विरासत, शासन, शक्ति-संरचना, सामाजिक सुधार, राजनीतिक चेतना।

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास के विविध अध्यायों में राजघरानों की महिलाएँ प्रायः पर्दे के पीछे रहकर कार्य करती थीं, किंतु अनेक जयत्तरों पर उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से सत्ता समाज और संस्कृति को प्रभावित किया। ग्वालियर राज्य, विशेषकर सिंधिया राजवंश, इस दृष्टि से उल्लेखनीय है क्योंकि यहाँ की नहिलाओं ने यल धार्मिक और पारिवारिक दायित्य तक अपने को सीमित नहीं रखा बल्कि उन्होंने शासन की नीतियों, प्रशासनिक व्ययवस्था और सामाजिक सुधार आंदोलनों पर स्थायी छाप छोड़ी (शुष्णकांत ठाकुर, 2005) (1)

19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान ग्वालियर दरवार की महिलाएँ राजनीतिक चेतना और सामाजिक सक्रियता की प्रतीक के रूप में उभरी। नहारानी वैजाबाई सिंधिया, गंगाबाई राव सिंथिया और अन्य दरवारी महिलाओं ने उत्तराधिकार विवादों के समाधान में निर्णायक हस्तक्षेप किया तथा ब्रिटिश अधिकारियों के साथ प्रत्यक्ष संवाद स्थापित कर अपनी राजनीतिक सनक और नेतृत्व क्षमता को प्रमाणित किया। यह तथ्य दर्शाता है कि महिलाएँ केवल औपचारिक प्रतीक नहीं थीं, यतिक तत्ता–संरचना का सक्रिय हिस्सा थीं (रमेशचन्द्र शर्मा, 2010) (2)।

सामाजिक दृष्टि से भी इन महिलाओं ने शिक्षा, महिला अधिकारों और कुरीतियों के विरोध के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने न केवल बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा दिया, वकि विधवा पुनर्विवाह और पर्दा प्रथा जैसे प्रश्नों पर भी अपनी आवाज उठाई। उनके प्रयासों ने ग्वालियर समाज को नई दिशा दी और महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान की (नीलम पाण्डेय, 2017) (3)।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

इतिष्ठास लेखन में अवसर महिलाओं की भूमिकाओं को हाशिये पर रख दिया जाता है, किंतु सिंधिया राजवंशीय परिप्रेक्ष्य में यह स्पष्ट है कि इन महिलाओं की शक्ति-संरचना ग्वालियर राज्य की राजनीतिक स्थिरता और सांस्कृतिक विकास के लिए आधारभूत रही। इस अध्ययन का उद्देश्य इन्हीं योगदानों का विश्लेषण करना तथा विरासत और शासन पर उनके दीर्घकालिक प्रभाव को समझना है।

शोध उद्देश्य

1. सिंधिया राजवंश की महिलाओं की ऐतिहासिक भूमिका का विश्लेषण करना।

2. उनकी विरासत के संरक्षण और विस्तार की प्रक्रिया को समझना।

3. शासन व्यवस्था पर उनके प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव का मूल्यांकन करना।

4. सामाजिक व राजनीतिक आंदोलनों में उनकी भागीदारी की पहचान करना।

साहित्य समीक्षा

ग्वालियर राज्य में नडिलाजों की भूमिका को समझने के लिए विभिन्न इतिहासकारों, सामाजिक चिंतकों और समाचार माध्यमों ने गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है-

शर्मा (2019) (4) ने महारानी वैजावाई सिंधिया की राजनीतिक सूजबूत और उनकी ब्रिटिश अधिकारियों से हुई वार्ताओं को विशेष रूप से उल्लेखनीय माना है। उनके अनुसार, वैजावाई का योगदान केवल व्यक्तिगत सत्ता-संघर्ष तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने भारतीय महिला राजनीतिक चेतना को एक नया जायाम प्रदान किया।

गुप्ता (2021) (5) ने अपने अध्ययन में यह दर्शाया कि ग्वालियर दरवार की महिलाएँ शिक्षा और सामाजिक सुधार आंदोलनों में सक्रिय रही थीं। उन्होंने वालिका विद्यालयों की स्थापना, विधवा पुनर्विवाह यो समर्थन तथा सामाजिक कुरीतियों पर प्रश्न उठाने जैसी पहलों को महिला नेतृत्य का प्रतीक नाना।

इतिहासकार Thapar (2002) (6) का नत है कि भारतीय राजवंशीय ठाँचों में महिलाओं की भूमिका अवतर परोक्ष रूप से कार्य करती थी, किंतु उनके निर्णय और परामर्श कई वार निर्णायक सिद्ध हुए। विशेषकर सिंधिया राजवंश में महिलाएँ न केवल पारिवारिक धरोहर की संरक्षक थीं, यतिक उन्होंने प्रशासनिक और कूटनीतिक निर्णयों में भी हस्तक्षेप किया।

प्राचीन पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में भी इन योगदानों के उल्लेख मिलते हैं। भारत जीवन (1885) (7) में ग्वालियर दरवार की महिलाओं के समाज सुधार संबंधी प्रयासों की प्रशंसा की गई, जबकि ग्यालियर गजट (1902) (8) ने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और शिक्षा क्षेत्र में सक्रियता को दर्ज किया। इन स्रोतों से स्पष्ट होता है कि ग्वालियर की महिलाएँ न केवल घरेलू दायरे तक सीमित रहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और राज्यनीति दोनों में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती रहीं।

इस प्रकार, उपलब्ध साहित्य यह सिद्ध करता है कि सिंधिया राजवंश की महिलाएं ज्यामिर राज्य की शक्ति-संरचना का अनित्य हिस्सा थीं। उन्होंने शिक्षा, सामाजिक सुधार, राजनीति और शूटनीति जैसे विविध क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए इतिहास में स्थायी छाप छोड़ी।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

18वीं शताब्दी का भारत राजनीतिक अस्थिरता और सत्ता-संघर्षो से गुजर रहा था। मराठा शक्ति यो विस्तार के साथ ग्वालियर राज्य धीरे-धीरे एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरा। महादजी सिंथिया (1761–1794) के कार्यकाल में ग्वालियर केवल एक सैन्य शक्ति नहीं रहा, बल्कि उत्तने शूटनीतिक

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संबंधों के माध्यम से ब्रिटिश सत्ता और अन्य भारतीय रियासतों से संवाद स्थापित किया। इस दौर में दरवार की महिलाएँ भी अप्रत्यक्ष रूप से सत्ता-निर्णयों में शामिल होने लगीं। उनकी भूमिका केवल धार्मिक और पारिवारिक सीमाओं तक सीमित न रहकर राजनीति और प्रशासन तक विस्तारित हुई (गुप्ता, 2021) (9) ।

दौलतराव सिंधिया (1794 - 1827) के शासनकाल में ग्वालियर ने आंतरिक और बाहरी चुनौतियों का सामना किया। उत्तराधिकार विवादों और सत्ता संघर्षो के समय महारानी वैजावाई सिंधिया का हस्तक्षेप निर्णायक सिद्ध हुआ। उन्होंने अंग्रेज अधिकारियों से प्रत्यक्ष संवाद किया और ग्वालियर राज्य के हितों की रक्षा हेतु पत्राचार किया। यह उनकी राजनीतिक सूजबूत का प्रमाण था कि पुरुष-प्रधान सत्ता ढाँचे में भी उन्होंने अपनी स्थिति को मजबूत बनाए रखा (शर्मा, 2019) (10)।

सिंधिया राजवंश की महिलाएँ केवल राजनैतिक संघर्ष तक ही सीमित नहीं थीं, बल्कि उन्होंने सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भी गहरी छाप छोड़ी। 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान ग्वालियर दरबार में धार्मिक अनुष्ठानों, मंदिरों के संरक्षण और कला-संस्कृति को विस्तार में महिलाओं की अग्रणी भूमिका रही। ग्वालियर गजट (1902) (11) के लेखों में उल्लेख मिलता है कि नष्टारानी और अन्य दरवारी महिलाएँ लोक परंपराओं को संरक्षित करने के साथ-साथ नवाचार को भी प्रोत्साहित करती थीं।

इसी कालखंड में शिक्षा के क्षेत्र में भी महिलाओं का योगदान उल्लेखनीय रहा। ग्वालियर की दरवारी महिलाएँ यात्रिकाओं के लिए विद्यालयों की स्थापना में रुचि लेती थीं और महिला शिक्षा को सामाजिक प्रगति का साधन मानती थीं। इस प्रकार ग्वालियर का दरवार एक ऐसा केंद्र यना, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का समन्वय हुआ।

जतः ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से स्पष्ट होता है कि सिंधिया राजवंश की महिलाएँ केवल पारिवारिक संरचना की रक्षक नहीं थीं, यलिया ये राज्य की राजनीति, समाज और संस्कृति में सक्रिय भागीदारी निनाती थीं। उनकी भूमिका ने ग्वालियर राज्य की शक्ति-संरचना को संतुलित और बहुआयामी त्वरूप प्रदान किया।

सिंधिया राजवंश की महिलाओं का योगदान केवल पारिवारिक परंपराओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक धरोहर को सुरक्षित रखते हुए उसे नए आयाम दिए। उनके प्रयासों से ग्वालियर राज्य में विरासत का संरक्षण और विस्तार एक सतत प्रक्रिया के रूप में विकसित हुजा महारानी वालावाई शितोले और गंगाबाई राव सिंधिया ने धार्मिक स्थलों, नंदिरों और धर्मशालाओं के निर्माण में विशेष राधि ली, जिससे धार्मिक-सांस्कृतिक वातावरण और भी जीवंत हो सका (मिश्र, 1987) (12)।

इन महिलाओं ने न केवल वास्तु संरक्षण का कार्य किया, बल्कि साहित्य और संगीत को भी प्रोत्ताठन दिया। उन्होंने दरवारी कवियों, पुरोहितों और कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया। इससे ग्वालियर में शास्त्रीय संगीत और मराठी भक्ति साहित्य की परंपरा को बढ़ाया मिला। कवि वचन सुधा (1890) (13) में दर्ज है कि राजघराने की स्त्रियों कवियों और संतों के सत्संगों का आयोजन करती थीं, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया तेज हुई।

ग्वालियर की महिलाएँ नराठी और संस्कृत परंपराओं को स्थानीय प्रज संस्कृति के साथ जोड़ने में सफल रहीं। इसका प्रभाव धार्मिक त्योहारों, लोककथाओं और सांस्कृतिक आयोजनों में स्पष्ट दिखाई देता है। सिंह (2005) (14)। का कहना है कि ग्वालियर में धार्मिक अनुष्ठानों और उत्तयों की जो विशिष्ट शैली विकसित हुई, उसमें महिलाओं का योगदान निर्णायक रहा।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

साथ डी. इन महिलाओं ने सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्यात करते हुए शिक्षा और धर्मार्थ कार्यों को भी प्रोत्साहन दिया। उन्होंने कन्याओं की शिक्षा हेतु धर्मशालाओं और विद्यालयों की स्थापना में सष्ठायता की। हिंदुस्तानी (1910) (15) अखवार में उल्लेख मिलता है कि महारानी वैजावाई और गंगाबाई राव सिंधिया ने कई धर्मार्थ नित्रियों को अपनी ओर से सहायता दी, जिससे ग्वालियर में सामाजिक सेवाएँ मजबूत हुई।

अतः यह स्पष्ट है कि सिंधिया राजवंश की महिलाएँ न केवल विरासत की संरक्षक थीं यलिया उन्होंने उसे समय के साथ विस्तार और नई पहचान भी दी। उनके संरक्षण से ग्वालियर की संस्कृति, साष्ठित्य और सामाजिक चेतना समूद्ध हुई और आज भी यह विरासत ग्वालियर की पहचान के रूप में जीवित है।

शासन पर प्रभाव

ग्वालियर राज्य के प्रशासनिक ढाँचे में दरवारी महिलाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता हैं। ये केवल राजपरिवार की मर्यादा तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि कई बार शासन संचालन और राजनीतिक निर्णयों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। महारानी वैजावाई सिंथिया इसका प्रमुख उदाहरण हैं, जिन्होंने उत्तराधिकार विवादों और राज्य की राजनीतिक अस्थिरता के समय निर्णायक हस्तक्षेप किया। उन्होंने न केवल दरवारी सलाहकारों को मार्गदर्शन दिया बल्कि ब्रिटिश अधिकारियों के साथ संवाद स्थापित कर अपने कौशल का परिचय भी दिया (दिवाकर, 1991) (16)।

दरवारी महिलाएँ संकट की घड़ी में राजनीतिक नव्यस्थ' की तरह कार्य करती थीं। उनको निर्णयों से यह स्पष्ट होता है कि ये केवल पारंपरिक परंपरा का प्रतीक नहीं थीं, बल्कि राजनीतिक संतुलन बनाए रखने में सक्षम थीं। इंडियन निरर (1895) (17) में प्रकाशित एक रिपोर्ट में उल्लेख है कि वैजावाई और अन्य राजघराने की महिलाएँ अवसर राजनैतिक कूटनीति की चर्चाओं का हिस्सा वनती थीं और आवश्यकता पड़ने पर अपनी राय खुलकर रखती थीं।

महिलाओं की इस भूमिका का असर केवल दरवार तक ही सीमित नहीं रहा। उनके प्रभाव से प्रशासनिक निर्णयों में मानवीय दृष्टिकोण को भी नहत्य मिला। सामाजिक कल्याण, धार्मिक अनुष्ठानों और सार्वजनिक सुविधाओं से संबंधित नीतियों पर भी उनका परोक्ष प्रभाव पड़ा। शर्मा (2008) (18) क का मत है कि ग्यालियर के राजनैतिक इतिहास में महिलाओं का योगदान न केवल शक्ति-संतुलन बनाए रखने में था, बल्कि उन्होंने शासन को नरमाई और न्यायसंगतता की दिशा भी दी।

इस प्रकार शासन में दरवारी महिलाओं की उपस्थिति ने यह सिद्ध किया कि ये केवल शक्ति का प्रतीक नहीं थीं, बल्कि राजनीतिक और प्रशासनिक निर्णयों का सक्रिय हिस्सा थीं। उनके प्रभाव ने ग्वालियर राज्य की स्थिरता और सामाजिक संवेदनशीलता दोनों को मजबूती प्रदान की।

सामाजिक और राजनीतिक योगदान

सिंधिया राजवंश की महिलाएँ या पारिवारिक और धार्मिक परंपराओं तक सीमित नहीं रहीं. यठिक उन्होंने समाज और राजनीति दोनों क्षेत्रों में गहरी छाप छोड़ी। ग्वालियर राज्य का सामाजिक ढाँचा जित्त मानवीय मूल्यों पर आधारित था, उत्तमें इन महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही। महारानी वैजावाई और अन्य दरवारी स्त्रियों ने समाज में शिक्षा, महिला कल्याण और धार्मिक सष्टिष्णुता जैसे विचारों को आगे बढ़ाया। उनके प्रयासों ने ग्वालियर को उस समय की अन्य रियासतों की तुलना में प्रगतिशील रूप दिया।

सामाजिक क्षेत्र में दरवारी महिलाओं का योगदान विशेष रूप से शिक्षा के प्रसार में देखा जा सकता है। हिन्दू पत्रिका (1904) (19) में प्रकाशित एक लेख में उल्लेख है कि राजघराने की महिलाओं ने कल्या शिक्षा हेतु धर्मशालाओं और पाठशालाओं को सहयोग प्रदान किया। उन्होंने समाज में व्याप्त स्त्री-शिक्षा के विरोध को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यही नहीं, उन्होंने विधवाओं क्षे पुनर्विवाह और अनावश्यक सामाजिक बंधनों को चुनौती देकर समाज सुधार जांदोलनों को प्रेरणा दी।

राजनीतिक क्षेत्र में उनका योगदान और भी प्रभावशाली था। ब्रिटिश औपनिवेशिक शक्ति यो बढ़ते दबाव के समय दरवारी महिलाओं ने अपने राजनीतिक निर्णय और कूटनीतिक समझ का परिचय दिया। महारानी वैजावाई ने ब्रिटिश अधिकारियों के साथ वार्ताओं में ग्वालियर राज्य के हितों को स्पष्ट रूप से रखा।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

द पायनियर (1910) (20) में प्रकाशित एक रिपोर्ट में यह उल्लेख है कि ग्वालियर की महारानियाँ राजनैतिक मंच पर सक्रिय होकर प्रेरणादायी स्त्री नेतृत्य का परिचय देती थीं।

इसके अतिरिक्त, महिलाओं ने राजनीतिक संघर्षो में भी नैतिक समर्थन और दिशा प्रदान की। जय-जय ग्वालियर राज्य में सत्ता-संघर्ष हुए, तब इन महिलाओं ने न केवल उत्तराधिकार विवादों को शांत किया बल्कि प्रजा में शांति और स्थिरता बनाए रखने का कार्य भी किया। तिवारी (2017) (21) ने अपने अध्ययन में उल्लेख किया है कि ग्वालियर की महिलाएँ सामाजिक समरसता और राजनीतिक संतुलन की साकार प्रतीक थीं।

सामाजिक और राजनीतिक योगदान का सम्मिलित प्रभाव यह रहा कि ग्वालियर राज्य केवल सत्य या राजनैतिक शक्ति का प्रतीक न रहकर सांस्कृतिक और नानवीय दृष्टि से भी समृद्ध हुआ। इन महिलाओं ने यह साबित किया कि समाज और राजनीति दोनों क्षेत्रों में स्त्रियाँ नेतृत्वकारी भूमिका निभाने में सक्षम हैं।

निष्कर्ष

सिंधिया राजवंश की महिलाओं की भूमिका भारतीय इतिहास की उत्त परंपरा को रेखांकित करती है, जिसे लंबे समय तक हाशिए पर रखा गया। प्रायः यह माना जाता है कि राजघरानों की स्त्रियाँ शेया शार्मिक अनुष्ठानों और पारिवारिक दायित्यों तक सीमित थीं, किंतु ग्वालियर राज्य का इतिष्ठात्त इस धारणा को चुनौती देता है। यहाँ की महिलाएँ न केवल राजनीतिक संकटों के समय निर्णायक सावित हुई, बल्कि उन्होंने अपनी सक्रियता से शासन और समाज दोनों को नई दिशा दी।

महारानी वैजावाई का उदाहरण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उत्तराधिकार विवादों के समय उनके हस्तक्षेप ने यह सिद्ध कर दिया कि ये यल राजपरिवार की संरक्षक नहीं थीं, बल्कि एक कुशल राजनैतिक कूटनीतिश भी थीं। ब्रिटिश अधिकारियों से संवाद कर उन्होंने ग्वालियर राज्य की त्यायत्तता और अस्तित्व को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी प्रकार, दरवारी महिलाओं का कला, साहित्य और धार्मिक धरोधरों के संरक्षण में योगदान यह दर्शाता है कि उन्होंने न केवल अतीत की परंपराओं को जीवित रखा बल्कि उन्हें आगे बढ़ाया।

सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में भी इन महिलाओं ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई। शिक्षा का प्रसार, विशेषकर स्त्री-शिक्षा को प्रोत्साहन देना, धर्मशालाओं और कन्या पाठशालाओं की स्थापना करना उनके सामाजिक सरोकारों को प्रकट करता है। यह तथ्य इस बात का प्रमाण है कि ग्वालियर राज्य में महिलाओं का दृष्टिकोण दूरदर्शी था। उन्होंने न केवल तत्कालीन समाज की आवश्यकताओं को समझा, बल्कि जाने वाली पीढ़ियों के लिए एक ठोस नींव भी रखी।

इतिहासकार गाडगिल (1982) (22) का मत है कि ग्वालियर की महिलाओं ने शक्ति और संवेदना का संतुलन प्रस्तुत किया। उन्होंने राजपरिवार की गरिमा और सत्ता की निरंतरता को सुरक्षित रखा, साथ ही सामाजिक नानवीय मूल्यों का भी संरक्षण किया। इस दृष्टि से उनका योगदान शेयत्र ग्वालियर राज्य तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह भारतीय समाज और संस्कृति के व्यापक परिप्रेक्ष्य में भी महत्वपूर्ण वन गया।

जतः कहा जा सकता है कि सिंधिया राजवंश की महिलाओं ने भारतीय इतिहास की उस परंपरा को समुद्ध किया है जिसमें स्त्रियाँ केवल प्रतीक नहीं, बल्कि सक्रिय नेतृत्वकर्ता रही हैं। उनकी भूमिका ने ग्वालियर की शक्ति-संरचना को नया आकार दिया और उन्हें भारतीय इतिहास में स्थायी स्थान प्रदान किया। उनका योगदान यह संदेश देता है कि किसी भी समाज और राज्य की प्रगति में महिलाओं की सहभागिता अनिवार्य है।

संदर्भ

1. ठाकुर, कृष्णाकांत (2005): ग्वालियर का सामाजिक इतिहास, साहित्य भयन, दिल्ली, पू. 71.
2. शर्मा, रमेशचन्द्र (2010): सिंथिया राजवंश की सांस्कृतिक धरोहर मध्यभारत प्रकाशन, ग्वालियर, पू. 78-101.
3. पाण्डेय, नीलम (2017) ग्वालियर दरवार की महिलाओं का योगदान, इतिहास वार्ता पत्रिका, 12(3), 45-62
4. शर्मा, आर. (2019): भारतीय राजघरानों में महिला नेतृत्य की परंपरा, राजानस प्रशाशन, दिल्ली।
5. गुप्ता, पी. (2021) ग्वालियर राज्य और महिला शिक्षा आंदोलन, भारतीय साहित्य भवन, वाराणसी, पू. 56-74.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

6. Thapar, R. (2002): Early India- From the Origins to AD 1300, Penguin Books, New Delhi.
7. भारत जीवन (1885)- ग्वालियर दरबार में महिलाओं की सक्रियता इलाकावाद, पू. 3.
8. ग्यालियर गजट (1902)- महिला शिक्षा और सामाजिक सुधार पर संपादकीय, ग्वालियर राज्य प्रेत, ग्यासियर पु. 7.
9. गुप्ता, पी. (2021) ग्वालियर राज्य और महिला शिक्षा आंदोलन, भारतीय साहित्य भवन, वाराणसी, पू. 56-74.
10. शर्मा, आर. (2019): भारतीय राजघरानों में महिला नेतृत्व की परंपरा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 78-101.
11. ग्यासियर गजट (1902)- महिला शिक्षा और सामाजिक सुधार पर संपादकीय, ग्वालियर राज्य प्रेस, ग्वालियर, पू. 11.
12. मिश्र, डी. (1987), ग्वालियर राज्य का सांस्कृतिक इतिहास, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल. पू. 90-115.
13. सुधा (1890): सांस्कृतिक आयोजनों का विवरण, नागरी प्रशारिणी सभा, काशी, पू.15.
14. सिंह दी. (2005) भारतीय रियासतों में सांस्कृतिक चेतना, राजस्थानी प्रशाशन, जयपुर, पू.133-150.
15. हिंदुस्तानी (1910): ग्वालियर राज्य में अर्माथ गतिविधियों पर लेख, हिंदुस्तानी प्रेस, इलाकावाद, पू. 4.
16. दिवाकर, आर. आर. (1991) ग्वालियर का राजनीतिक इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग, दिल्ली, पू. 200-228.
17. इंडियन मिरर (1895) ग्यालियर दरबार और महिला सहभागिता पर टिप्पणी, कलकत्ता, पू. 6.
18. शर्मा, आर. (2008): भारतीय राजवंश और महिला नेतृत्य, भारत भारती प्रकाशन, वाराणसी, पू. 145-165.
19. हिन्दू पत्रिका (1904): ग्यालियर में महिला शिक्षा का प्रसार, कलकाता, पू. 9.
20. पायनियर (1910): प्रिंसली स्टेटस में महिला नेतृत्य, इलाहावाद पू. 2.
21. तिवारी, एस. (2017) भारतीय रियासतें और महिला नेतृत्य, राजकमल प्रकाशन, भोपाल, पू.188-204.
22. गाडगिल, पी. (1982): भारतीय रियासतें और उनका सामाजिक इतिहास, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 97-118.